TDC PART-I HINDI HONS

Paper – I

शे.शं.मि./ ई.कं./एस.एम./08

हिंदी साहित्य का काल-विभाजन एवं नामकरण

हिंदी साहित्य का इतिहास लगभग एक हजार या उससे कुछ अधिक वर्षों की साहित्यिक धारा का इतिहास है | अध्ययन की सुविधा के लिए विभिन्न युगों की रचनाओं और साहित्यिक प्रवृत्तियों के आधार पर उस काल-खंड के नामकरण की चेष्टा की जाती रही है | इसी आधार पर साहित्य के विभिन्न इतिहासकारों ने अपने-अपने ढंग से हिंदी साहित्य के विभिन्न कालखंडों का नामकरण किया है |

हिंदी साहित्य के पहले प्रामाणिक इतिहासकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में-"साहित्य जनता की चित्तवृत्तियों का संचित प्रतिबिम्ब होता है | आदि से अंत तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परंपरा को परखते हुए साहित्य परम्परा के साथ उनका सामंजस्य दिखलाना ही साहित्य का इतिहास कहलाता है |"

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिंदी साहित्य के प्रथम प्रामाणिक इतिहासकार हैं | उनके अनुसार हिंदी साहित्य के इतिहास को मुख्यतः चार भागों में विभक्त किया जा सकता है –

1.**वीरगाथाकाल** (आदिकाल)-

सं. 1050 से 1375 तक (सन् 993 से 1318 ई. तक)

2. **मध्यकाल** –

(क) पूर्व मध्यकाल *(भक्ति काल)*

सं. 1375 से 1700 तक (सन् 1318 से 1643 ई. तक)

(ख) उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल)

सं.1700 से 1900 तक (सन् 16 43 से 1843 तक)

3.**आधुनिक काल** *(गद्यकाल)*

सं.1900 से अबतक (सन् 1843 से अबतक)

शुक्ल जी ने रचनाओं की प्रवृत्ति को नामकरण का मुख्य आधार बनाया | हिंदी साहित्य के इतिहास के प्रारम्भिक लेखकों – गार्सा द तासी तथा शिवसिंह सेंगर ने साहित्य के काल-विभाजन की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया | हिंदी साहित्य के इतिहास के काल-विभाजन का सर्वप्रथम प्रयास जार्ज ग्रियर्सन ने किया | उनका काल-विभाजन निम्न प्रकार से है –

(क)चारण काल (700 से 1300 ई.)

(ख)पंद्रहवीं शती का धार्मिक पुनर्जागरण

(ग)जायसी की प्रेम कविता

(घ)ब्रज का कृष्ण सम्प्रदाय

(ङ)मुग़ल दरबार

(च)तुलसीदास

(छ)रीतिकाव्य

(ज)तुलसीदास के अन्य परवर्ती |

(झ)अट्ठारहवीं शताब्दी |

(ञ)कंपनी के शासन में हिन्दुस्तान |

(त)विक्टोरिया के शासन में हिन्दुस्तान |

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि यह काल-विभाजन साहित्य के भिन्न-भिन्न अध्यायों का नामकरण भर है | आगे चलकर मिश्र बंधुओं ने 'मिश्र बन्धु विनोद' में हिंदी साहित्य के इतिहास का अपनी दृष्टि से काल-विभाजन किया –

1.आरंभिक काल – (क) पूर्वारम्भिक काल (700 -1343 वि.)

(ख) उत्तरारम्भिक काल (1344 - 1444 वि.)

2.माध्यमिक काल – (क) पूर्व माध्यमिक काल (1445 – 1560 वि.)

(ख)प्रौढ़ माध्यमिक काल (1561 -1680 वि.)

3.अलंकृत काल - (क) पूर्वालंकृत काल (1681- 1790 वि.)

(ख)उत्तरालंकृत काल (1791-1889 वि.)

4.परिवर्तन काल - (1990- 19 25 वि.)

5.वर्तमान काल - (1926 वि. से अद्यावधि)

निस्संदेह मिश्र बंधुओं का वर्गीकरण ग्रियर्सन की अपेक्षा प्रौढ़ है किन्तु यह काल-विभाजन भी दोषमुक्त नहीं है | इसमें पहली आपत्ति यह है कि मिश्र बंधुओं ने 700 से 1300 शती के अपभ्रंश भाषा में निबद्ध साहित्य को भी हिंदी की परिधि में समेट लिया है | अलंकृत और परिवर्तन काल का नामकरण भी वैज्ञानिक नहीं है |

डॉ. रामकुमार वर्मा के काल-विभाजन के अंतिम चार काल-खंड तो आचार्य शुक्ल के विभाजन के अनुरूप ही हैं | केवल 'वीरगाथा काल' के स्थान पर 'चारण काल'

नाम दे दिया गया है किन्तु उनमें एक विशेषता 'संधि काल' की है, जो वस्तुतः गुण-वृद्धि का सूचक कम, दोष-वृद्धि का द्योतक अधिक है | 'हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास' के लेखक डॉ.गणपति चन्द्र गुप्त ने काल-विभाजन में कुछ संशोधन कर वर्गीकरण को नया रूप देने का प्रयास किया है | उन्होंने आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेद्वी द्वारा दिए गए नामों – आदिकाल, भक्तिकाल तथा रीतिकाल को यथावत स्वीकार कर आधुनिक काल में कुछ परिवर्तन कर काल-विभाजन को अद्यतन स्वरूप प्रदान किया है –

1.आदिकाल (650 -1350 ई. तक)

2. भक्ति काल (1350 – 1650 ई. तक)

3.रीति काल (1650 – 1857 ई. तक)

4. आधुनिक काल (1857 से...

(क)भारतेंदु काल [पुनर्जागरण काल] – 1857 – 1908 ई.तक

(ख)द्विवेदी काल [जागरण सुधार काल]-1908 -1915 ई. तक

(ग)छायावाद काल -1915-1938 ई.तक

(घ)छायावादोत्तर काल –

1.प्रगति-प्रयोग काल -1938 -1953 ई. तक

2.नवलेखन काल – 1953 ई. से अबतक

विभिन्न विद्वानों द्वारा किये गए नामकरणों पर सम्यक दृष्टि से विश्लेषण आवश्यक है| आचार्य शुक्ल ने हिंदी के प्रारम्भिक (आदि) काल की सीमाओं का निर्धारण सं.1050 वि. से 1375 वि. तक करके इसे 'वीरगाथा काल' के नाम से अभिहित

किया है | शुक्ल जी ने जिन रचनाओं के नाम पर उक्त काल का नामकरण किया है, वे या तो अस्तित्वहीन घोषित हो चुकी हैं अथवा उनमें से कुछ परवर्ती काल की सिद्ध हो चुकी हैं | इस कारण उक्त काल का नामकरण 'वीरगाथा काल' सटीक सिद्ध नहीं होता | इसी प्रकार डॉ. रामकुमार वर्मा, राहुल सांकृत्यायन तथा महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा उक्त काल के लिए क्रमशःदिए हुए नामों – 'चारण काल', 'सिद्ध सामंत काल', तथा 'बीज वपन काल' को भी एकांगी समझना होगा | आचार्य शुक्ल ने उत्तर मध्यकाल को 'रीतिकाल' तथा अन्य कतिपय इतिहास लेखकों ने इसे 'शृंगार-काल' तथा 'कला-काल' और 'अलंकृत काल' के नामों से अभिहित किया किन्तु रीति-पद्धति की प्रमुखता के आधार पर उक्त काल को 'रीति काल' कहना तर्क संगत नहीं है | उस युग में श्रृंगारिकता एवं अलंकरण की प्रवृत्ति की प्रमुखता अवश्य है किन्तु यह तथ्य है कि उक्त काल में साहित्य की रचना केवल राज्याश्रय में ही नहीं हुई बल्कि धर्माश्रय और लोकाश्रय में भी प्रभूत साहित्य का प्रणयन हुआ |

उपर्युक्त सभी नामकरणों पर विचार करते हुए डॉ. नगेन्द्र ने अत्यंत वैज्ञानिक दृष्टिकोण से हिंदी-साहित्य के विभिन्न कालखंडों का अत्यंत सटीक नामकरण किया है, जो नवीन शोधों के आधार पर भी सर्वथा वैज्ञानिक और तर्क-संगत प्रतीत होता है –

1.आदिकाल –सातवीं शती के मध्य से चौदहवीं शती के मध्य तक |

2.भक्तिकाल – चौदहवीं शती के मध्य से सत्रहवीं शती के मध्य तक |

3.रीतिकाल -सत्रहवीं शती के मध्य से उन्नीसवीं शती के मध्य तक |

4.आधुनिक काल – उन्नीसवीं शती के मध्य से अब तक :

1.पुनर्जागरण -काल [भारतेंदु –काल] -1857 -1900 ई.

2.जागरण-सुधार-काल [द्विवेदी –काल] -1900 -1918 ई.

3.छायावाद –काल -1918 -1938 ई.

4. छायावादोत्तर काल

(क)प्रगति-प्रयोग- काल -1938-1953 ई.

(ख)नवलेखन –काल - 1953 से अब तक |

यही काल-विभाजन और नामकरण सर्वथा उपयुक्त है |